शिक्षकों हेतु नवाचार की आवश्यकता एवं महत्वः– एक अध्ययन

राजीव रंजन सिंह (एम0 ए0 (इतिहास) , एम0 एड0, यू0जी0सी0 नेट (शिक्षाशास्त्र) पी0एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) ।
व्याख्याता (इतिहास) इण्टर कॉलेज, नवतन , सिवान।
अतिथि व्याख्याता जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान , सिवान।

परिचयः– वर्तमान युग में शिक्षा के क्षेत्र में नित नई वैज्ञानिक विधियों, अनुसंधानों तथा तकनीकी उपकरणों के प्रयोग के कारण शिक्षण – अधिगम की प्रक्रिया में असाधारण रूप से परिवर्तन हो रहा है। आज वर्तमान युग में शिक्षा हेतु बालक के निर्माण पर नहीं अपितु बालकों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण प्रक्रिया के निर्धारण पर बल दिया जा रहा है, ताकि मानव संसाधनों का उचित रूप से दोहन किया जा सके तथा साथ ही बालक भी अपनी क्षमता को नैसर्गीक रूप से विकसित कर सके। यूँ तो सीखने–सीखाने की अनेक पद्धतियों अनादि काल से प्रचलित रहीं है तथा समय के सापेक्ष इनका महत्व आज भी प्रसांगिक है परन्तु वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षकों में नवाचारी प्रवृतियों का विकास आवश्यक है ताकि शैक्षिक समस्याओं का समाधान सुगमतापूर्वक किया जा सके।

नवाचार का अर्थ केवल नई विधियों, प्रविधियों एवं तकनीकों के विकास से ही नहीं होता बल्कि प्रक्रिया या सेवा में थोड़ा या कुछ बड़ा परिवर्तन अथवा पूर्व की कार्य पद्धति या विधियों के क्रम में परिवर्तन को भी नवाचार में शामिल किया जाता है जिसका सार्थक प्रभाव शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में देखने को मिलता है।

व्यक्ति और समाज में हो रहे परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा है। शिक्षा को समयानुकूल बनाने के लिए शैक्षिक विधाओं में नवाचार ने अपनी उपयोगिता एव सार्थकता स्वंय सिद्ध कर दी है। ट्रायटेन महोदय के अनुसार :– ''शैक्षिक नवाचारों का उद्भव स्वतः नहीं होता बल्कि उन्हें खोलना पड़ता है तथा सुनियोजित तरीके से इन्हें प्रयोग में लाना होता है ताकि परिवर्तित परिवेष में गति मिल सके और परिवर्तन के साथ हम गहरा तारतम्य बनाये रख सके। इस प्रकार नवाचार एक नवीन विचार है जो नवीन और वर्तमान का गुणात्मक स्वरूप है। नवाचार की परिस्थितियां हर क्षेत्र में अलग–अलग अर्थ बताती है इनके प्रयोग के तरीकों का स्वरूप भी अलग–अलग होता है। प्रो0 उदय पारिख तथा टी0पी0राव ने नवाचार को कुछ इस प्रकार परिभाशित किया है–: किसी ''उपयोगि अर्थ के लिए किसी व्यक्ति या निकाय के द्वारा किया गया विचार अथवा अभ्यास नवाचार कहलाता है।

नवाचार के प्रकारः– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संचालक के रूप में एक शिक्षक अपने कार्यों के संचालन के समय परिस्थिति अन्य क्रियाओं के संपादन हेतु नवाचार का प्रयोग करता है। वर्तमान युग शैक्षिक तकनीक द्वारा शिक्षा को परिवेष से जोड़ कर शिक्षा को व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप प्रदान करने पर बल देता है। अतः इस हेतु एक शिक्षक नवाचार के निम्न प्रकारों को आधार बना कर अपनी कार्यकुशलता को समृद्ध करता है : –

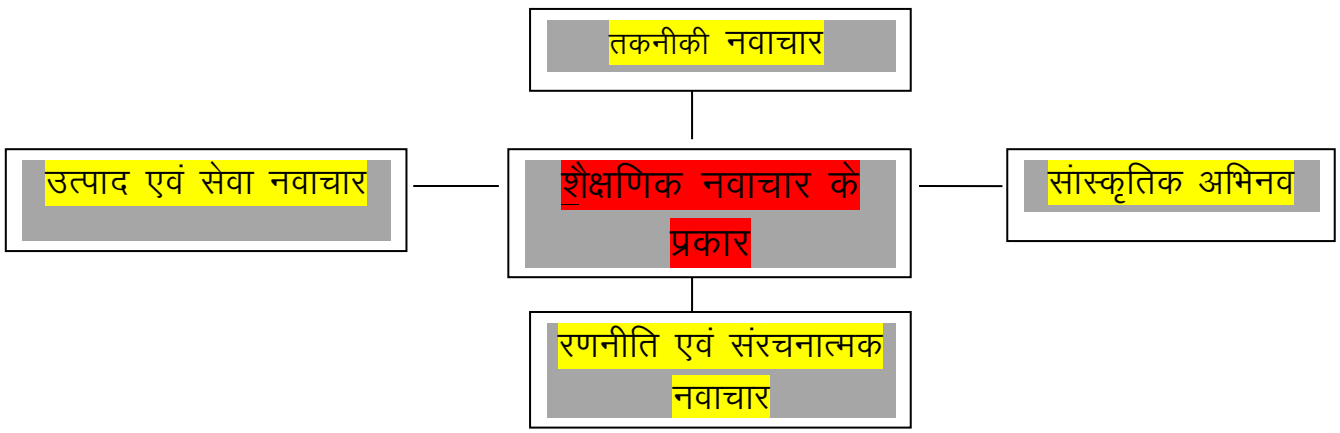

1. **तकनीकी नवाचार :–** नवाचार को क्रिया रूप में परिवर्तित करने हेतु तकनीकी प्रक्रिया एवं संगठनों में समय एवं स्थान के संदर्भ में नई तकनीकों का तार्कीक क्रम में प्रस्तुतीकरण किया जाता है, इसमें ज्ञान एव कौशल को आधार बनाया जाता है।

नवाचार की प्रक्रिया में संगठनात्मक प्रक्रियाओं को बदलने या व्यवहार्य उतपादों और सेवाओं को बनाने के लिए नए ज्ञान का प्रयोग शामिल है। नवीन तकनीक, अन्तदृश्टि, प्रतिस्पर्धी जानकारी, रचनात्मकता, प्रयोग के परिणाम, संप्रेशण की गुणवता आदि नवाचार के श्रोत हो सकते है।

2. **उत्पाद सेवा नवाचारः–** उत्पाद सेवा नवाचार प्रक्रिया के आउटपुट का सन्दर्भ प्रस्तुत करते है। इस प्रकार का नवाचार अंतिम उपयोगकर्ताओं के लिए नए उत्पादों एव सेवाओं को विकसित करने के प्रयासों को संदर्भित करता है। उत्पादन सेवा या प्रक्रिया नवाचार अक्सर नए रणनीतियों से जुड़े होते है। क्योंकि कई प्रक्रिया सुधारों का उददेश्य संचालन की लागत को कम करना होता है।

3. **रणनीति और संरचनात्मक नवाचार :–** रणनीति और संरचनात्मक नवाचार किसी प्रक्रिया की संगठनात्मक प्रशासनिक भाग का अंश होता है। इसके द्वारा संगठन में प्रबंधन, पर्यवेक्षण, नीति, श्रम, समन्वय, सूचना और नियंत्रण प्रणाली में परिवर्तन शामिल है।

4. **सांस्कृतिक अभिनवः–** सांस्कृतिक नवाचार उप परिवर्तनों को संदर्भित करते हैं जो प्रक्रिया को संचालित करने वाले व्यक्तियों के दृश्टिकोण, मान्यताओं, मूल्यों, अपेक्षाओं, क्षमताओं और व्यवहार में हो सकते है। सांस्कृतिक नवाचार कर्मचारियों के विचारों को बदलता है। ये प्रोद्योयोगिकी, संरचना का उत्पादों और सेवाओं की बजाय मानसिकता में परिवर्तन है। किसी संगठन में संस्कृति की शक्ति का उपयोग करने के तरीके की खोज करने से संगठन को प्रतिस्पर्घात्मक लाभ प्राप्त करने में मदद मिलती है।

नवाचारी शिक्षण पद्धति :– वर्तमान शिक्षण पद्धति वैज्ञानिक विधियों उपकरणों एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के प्रयोग द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बालकेन्द्रीत बनाने पर बल देती है। अर्न्तराष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1996) में शिक्षा के चार आधार स्तंभ– जानने के लिए शिक्षा ;(Learning to Know) कार्य करेन हेतु शिक्षा (Learning to Do), सीखने हेतु शिक्षा (Learning to Be) एवं एक दुसरे के साथ जीवन यापन एवं सामंजस्य हेतु शिक्षा (Learning to Live Together) द्वारा बालकों को वातावरण एवं परिस्थितियों से संबद्ध कर शिक्षण पर बल देने की बात कही गई है। इस हेतु कुछ प्रमुख प्रचलित विधियों यथा–खेल विधि, प्रोजेक्ट विधि, प्रयोग विधि, क्रिया विधि, अनुसंधान विधि, मस्तिश्क उद्धेलन विधि, भ्रमण विधि, अभिक्रमित अनुदेशन, एवं बहुमाध्यम उपागमों का प्रयोग आदि को इस प्रकार समायोजित तथा तार्किक रूप से प्रयोग किया जा सकता है जिससे बालक वातावरण से संबंधित होकर स्वंय अनुभव कर सके। इसके लिए षिक्षक परिथिजन्य परिवेष के अनुरूप शिक्षण विधियों का एकल या मिश्रित रूप से तार्किक प्रयोग कर सीखने हेतु नवीन विधियों, प्रविधियों एवं परिस्थिति का निर्माण कर शैक्षिक क्रियाकलापों में नवाचार को प्रस्तुत कर वह अपने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सफल सुगम एवं सुग्राह बना कर शिक्षण अधिगम के प्रभाव को प्रभावशाली बना सकता है।

सारांश

वर्तमान युग तकनीकी उन्नति एवं वैज्ञानिक प्रगति का युग है। इससे शिक्षा जगत भी अछुता नहीं है। बदलते परिवेष में शिक्षा के मनोवैज्ञानिकरण हो जाने के कारण शिक्षा को बाल केनद्रित बनाने पर बल दिया जा रहा है। बदलते परिवेष में बालकों के नैसर्गीक विकास में सहायता प्रदान करने के लिए शैक्षिक नवाचार अत्यन्त आवष्यक है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संचालक के रूप में एक शिक्षक को शैक्षिक नवाचार का अवसर प्राप्त होता है। वह कक्षा–कक्ष की जटिलताओं को दूर करने के लिए प्रचलित शैक्षिक विधियों प्रविधियों आदि का समयानुकुल प्रयोग तार्किक क्रम में करता है तथा साथ ही साथ इन विधियों के संगठनात्मक स्वरूप में थोड़ बहुत परिवर्तन कर नवाचार की प्रक्रिया को पूर्ण करता है। इससे वह अपने कक्षागत जटिलताओं को दूर कर अपने शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को सरल सुगम तथा सुग्राह बना कर अपने शिक्षण कार्य की प्रभावशीलता को बढ़ाता है। यहाँ नवाचार से तात्पर्य सवर्था नवीन तकनीकों एवं विधियों के विकास से ही नहीं होता है। वरण कक्षा की शैक्षणिक जटिलताओं को दूर करने के लिए प्रचलित विधियों , तकनीकों आदि का समयानुकुल तर्किक प्रयोग, आंषिक प्रयोग अथवा परिवर्तन भी शैक्षिक नवाचार कहलाता है।

सन्दर्भ

1. एलेक्जेन्डर लिच, एविटा, एवं वास्ट्युत :– ओपेन बुक ऑफ इनोवेशन
2. सिघल महेष चन्द्रः– भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ
3. धण्ड हैरीः– ''एन एनोवेटिव सोशल करिकूलम इन
4. कनाडा एन एक्सपेरिमेन्ट
5. एलेन, जे0ः– मोर टूल्स फॉर टिचींग कन्टेन्ट लिटरेसी
6. शोधगंगा
7. विक्लोपिडिया